हंसता हुआ धर्म

एक रात मुल्ला नसरुद्दीन घर लौटा, ज्यादा पीए हुए। चाबी ताले में डालना चाहता है, मगर हाथ कंप रहे हैं, चाबी ताले में जाती नहीं। राहगीर कोई देखा, पास आया और कहा, बड़े मियां, लाओ चाबी मुझे दो, मैं खोल दूं।

मुल्ला ने कहा कि चाबी तो मैं ही डाल दूंगा, तुम जरा इतना करो, यह कंपते हुए मकान को सम्हाल लो।

मुल्ला नसरुद्दीन से मैंने एक दिन पूछा कि नसरुद्दीन तुम जम्हाई बड़ी गजब की लेते हो! बहुत जम्हाई लेने वाले देखे, अगर कोई ओलंपिक हो जम्हाई का, तो तुम जीतोगे। यह तुमने कहां सीखी? उसने कहा, आप जानते हैं मेरी चार पत्नियां हैं, मैं मुसलमान हूं। मुंह खोलने का और कोई मौका ही नहीं मिलता। तो बस जम्हाई ही एक स्वतंत्रता बची।

मुल्ला नसरुद्दीन अमरीका की यात्रा पर गया। न्यूयॉर्क की एक बड़ी सड़क पर राह के किनारे उसने एक बोर्ड लगा देखा, जिस पर लिखा था कि उन्नीस सौ अस्सी में अमरीका में कारों की संख्या पचास करोड़ हो जायेगी। ऐसा पढ़ते ही वह एकदम भागा सड़क पर। खतरनाक था वैसा भागना। और एक पुलिसवाले ने उसे पकड़ा और कहा कि कहां भागे जाते हो? क्या इतनी जल्दी है? देखते नहीं, रास्ते पर इतना ट्रैफिक है? नसरुद्दीन ने कहा, छोड़ो भी! उन्नीस सौ अस्सी में कारों की संख्या पचास करोड़ हो जायेगी। अगर रास्ता पार करना है तो अभी ही कर लेना चाहिए।

मुल्ला नसरुद्दीन एक स्त्री के प्रेम में था। वह स्त्री जरा चिंतित थी, संदिग्ध थी। एक दिन उसने पूछा—जब शादी बिलकुल करीब ही आने लगी और दिन बहुत निकट आने लगा तो उस स्त्री ने पूछा कि नसरुद्दीन, क्या तुम शादी के बाद भी मुझे इतना ही प्यार करोगे? ऐसा ही प्रेम करोगे जैसा अभी करते हो? नसरुद्दीन ने कहा, क्यों नहीं? तुम तो जानती ही हो कि मुझे शादीशुदा औरतें ज्यादा पसंद हैं।

एक सभा में एक राजनेता बहुत देर तक बोलता चला गया। धीरे-धीरे लोग हटते गये, उठते गये। आखिर में सिर्फ एक आदमी मुल्ला नसरुद्दीन बैठा रह गया। फिर भी राजनेता ने पीछा न छोड़ा, उसे जो कहना था वह कहता ही रहा। अंत करके उसने नसरुद्दीन को कहा कि धन्यवाद नसरुद्दीन, मैंने तो कभी नहीं सोचा था कि तुम्हारा मुझमें इतना लगाव है कि तुम और इतने प्रेम से मुझे सुनोगे। मैं तुम्हारा आभारी हूं। वर्षों हो गये इस गांव में रहते, मैंने तुम्हारी तरफ कभी ध्यान ही नहीं दिया। एक तुम अकेले बचे और सब चले गये। नसरुद्दीन ने कहा फिजूल की बातों में न पड़ो, मैं आपके बाद का बोलने वाला हूं, इसलिए बैठा हूं। अब बैठो और सुनो मुझे।

चंदूलाल अपनी पत्नी के साथ घूमने निकले थे। रास्ते में एक छोटा सा तालाब पड़ता था, जिसमें बतख तैर रहे थे। एकाएक गुलाबो ने चंदूलाल को हुद्दा मार कर आंखें मटकाते हुए कहा : जरा उधर तो देखिए! वे बतख और बतखी कैसे एक-दूसरे के साथ प्रेम-क्रीड़ा कर रहे हैं!

चंदूलाल ने चश्मे को सम्हाला, गौर से देखा और पत्नी को झिड़कते हुए बोले : इतनी उम्र हो गई, फिर भी तेरा ध्यान अभी भी ऐसी चीजों की ओर जाता है। दस बच्चों की मां है, कुछ तो शरम खाया कर!

पत्नी कुछ न बोली। जब घूमकर दोनों फिर उसी तालाब के पास से गुजरे, तो गुलाबो ने वही दृश्य देखा। उससे रहा नहीं गया, बोली : अहा, जरा देखिए, दोनों अभी तक कैसे एक-दूसरे में मशगूल हैं।

चंदूलाल ने फिर अपना चश्मा चढ़ा कर देखा और बोले : अरी भाग्यवान, वह तो मैं भी देख रहा हूं। लेकिन तूने कुछ और देखा? बतखी दूसरी है।

– ओशो पुस्तकों से संक